International Journal of Research
Special Issue for UGC Approved Journal-Hindi Papers
Available at https://edupediapublications.org/journals
e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 05 Issue 02
January 2018

वैदिक साहित्य में धर्म और दर्शन

देवेन्द्र
इतिहास प्रवक्ता,
G.S.S.S. JHINJHAR CHARKHI DADRI (HARYANA)
78devender@gmail.com

शोध आलेख सार :–

धर्म की अगर बात करे तो इसका साधारण शब्दों में अर्थ हैं जो धारण करने योग्य हैं वही धर्म हैं। यहां हम धर्म के बारे में ये कह सकते हैं कि यह कुल मिलकार नैतिक मूल्यों का एक समूह मात्र हैं , जो मनुष्य के लिए नितांत आवश्यक हैं। आज हम दुनिया में कई धर्मों को पाते है लेकिन अगर हम सूक्ष्म दृष्टि से देखे तो उनमें हमें कई बाते एक समाज दिखाई देती हैं वो हैं नैतिकता लेकिन कहीं ना कहीं जहां तक मुझे समझ आया हैं इसमें हमें एक डर का भाव भी दिखाई देता हैं जिसमें पारलौकिक शक्तिअयों के प्रति डर को भी दिखाया गया हैं। हाँ यह सत्य प्रतीत होता कि धर्म के कारण मनुष्य जाति आध्य सुख प्राप्त करती रही हैं , मुसीबत के समय धर्म उनके लिये एक सबल बन कर उभरा हैं लेकिन वर्तमान परिस्थितियों को देखे या फिर इतिहास का विद्यार्थी होने के नाते जब अतीत पर नजर डालते हैं तो धर्म के नाम पर इस दुनिया में अत्याचार भी बहुत हुए हैं ।लेकिन हमारे यहां धर्म और खासकर वैदिक धर्म की बात करेंगे उसमें उसके आध्यात्मिक पक्ष की तरफ ज्यादा ध्यान देंगें। अगर हम दर्शन की बात करे तो यह वह ज्ञान हैं जो मनुष्यता के बारे में हमारी समझ विकसित करता हैं। जीवन क्या उसका उद्देश्य क्या हैं कुल मिलाकर सत्य की खोज ही दर्शन हैं यहां हम वैदिक समय में भारतीय दर्शन के बारे में बात करेंगें । उस समय की सोच समझ या कहे उनकी विद्वता की बात करेंगें।

मुख्य शब्द :–प्रतीत , नैतिक , दृष्टिकोण

शोधप्रविधिः–इस शोध के लिए शोध प्रविधि मुख्य रूप से द्वितीयक स्त्रोतों से ली गई हैं। इसमें ऐतिहासिक विश्लेषण के साथ–2 वर्णनात्मक दृष्टिकोण तथा व्यक्तिगत अनुभवों को भी स्थान दिया गया हैं। शोध सामग्री प्रसिद्ध पुस्तकों पत्र–पत्रिकाओं से प्राप्त की गई हैं।

वैदिक धर्म :–वैदिक धर्म की जानकारी का मुख्य स्त्रोत वेद हैं जिनकी संख्या चार हैं। इनमें ऋग्वेद सबसे प्राचीन हैं इसके अतिरिक्त सामवेद यर्जुवेद तथा अर्थववेद हैं।ऋग्वेद वेदों में सबसे प्राचीन हैं जिससे हमें विभिन्न देवताओं का उल्लेख हम पाते हैं। यहां हमें बहु देववाद के दर्शन होते हैं। इसमें देवता प्रकृति की विभिन्न शक्तियों के प्रतीक जिनका मानवीकरण किया गया हैं तथा यह माना गया हैं कि देवताओं की कृपा से ही संसार के कार्य कला संचालित होते हैं। इसमें देवताओं की मुख्य रूप से तीन वर्गों में बांटा गया हैं जो निम्न प्रकार से हैं।

1 आकाश के देवता :–इनमें वरूण पुषण , मित्र , सूर्य, विष्णु , अश्लिन उषा आदि प्रमुख हैं।

2 अंतरिक्ष के देवता :– इनमें इंद्र , पर्जन्य , रूद्र मरूत आदि की गणना की गई हैं।

3 पृथिवी के देवता :– अग्नि , बृहस्पति , सोम , आदि को रखा गया हैं ।

ऋग्वेदिक काल में देवता ज्यादातर पुरूष हैं इसमें महिल देवियों का स्थान गौण हैं। इस काल में महिला देवी के रूप में अदिति का नाम पाते हैं। इस काल में कुछ देवता भावनाओं के भी प्रतीक हैं जैसे श्रद्धा , मन्यु

,प्राण , काल आदि । देवताओं की उपासग यज्ञोंद्वारा की जाती थी। इस अवसर पर मन्त्रों द्वारा देवताओं का आवाहन किया जाता था। ऐसी मान्यता थी कि अग्नि द्वारा आहुति देवता तक पहुंचती हैं। प्रमुख यज्ञ थे – सोमयज्ञ , अग्नि होत्र , पुरूष मेध , पणचमहयज्ञ , वघ्येय , राजसूच झववमेध आदि। ऋग्वेद में सोमयज्ञ का विस्तृत विवरण मिलता हैं। पितृयज्ञ में पितरों की तुष्टि के लिये बलि दी जाती थी। अग्निहोत्र प्रातः एवं सध्याकाल में अग्नि की पूजा के साथ सम्पन्न होता था। सोमयज्ञ के अंतर्गत ही पुरूषमेध आता था। इसमें ग्यारह या पच्चीस यूप बनते थे जिसमें मध्यपुरूष को आबद्ध किया जाता था । यह पांच दिनों तक चलता था । पणचमहायज्ञ प्रत्येक गृहस्थ के लिये आवश्यक माना गया हैं । इसमें भूत यज्ञ , मनुष्य यज्ञ , पितृयज्ञ , देवयज्ञ तथा ब्रह्य यज्ञ सम्मिलित थे। 'राजसूच यज्ञ ' अभिषिक्त शासक द्वारा सम्पन्न किया जाता था। ज्ञात होता हैं कि राजसूच यज्ञ के अवसर पर राजा रत्नियों के घर जाता था जो उसे राजपद की मान्यता प्रदान करते थे । यह यज्ञ केवल राजन्य(क्षत्रिय) वर्ग के लोगों द्वारा किया जाता था। अश्वमेध सोमयज्ञ ही एक प्रकार था। सार्वभौम सता के अभिलाषी सम्राट यह यज्ञ किया करते थे। इसमें अश्व की बलि का विधान था।

वैदिक देवता सदाचार तथा नैतिक नियमों के संरक्षक हैं। उनके सम्बन्ध 'ऋत' से बताया गया हैं । 'ऋत' का अर्थ हैं सत्य तथा अविनाशी सत्ता । ''ऋत च सत्यं चाभीद्वात्तसोड ध्यजायत''। इसी के द्वारा विश्व में सुव्यवस्था का नियामक हैं। इस प्रकार ऋत से तात्पर्य विश्वव्यापी भौतिक एवं नैतिक व्यवस्था से हैं। डा0 राधा कृष्णन ने तो ऋत को सदाचार के मार्ग तथा बुराइयों से रहित यथार्थ पथ के रूप में निरूपित किया हैं । वैदिक ऋषियों ने देवताओं की कल्पना मनुष्यों के रूप में की । तथा उनमें सभी मानवीय गुणों को आरोपित कर दिया देवता तथा मनुष्य में अंतर यह था कि देवता अमर तथा सर्वव्यापी थे। वैदिक धर्म की एक विशिष्टता यह हैं कि इसमें जिस देवता की स्तुति की गयी हैं उसी को सर्वश्रेष्ठ एवं सर्वोपरि मान लिया गया हैं । कभी वरूण तथा कभी इन्ड को सर्वोपरि मानकर अन्य देवताओं की उत्पति उनसे मानी गयी हैं। मैक्समूलर ने इस प्रवृति को 'हेनोथीज्म ' अथवा 'कैथेनोथीज्म' की सज्ञा प्रदान की हैं । पृथ्वी तथा आकाश को मिलाकर 'द्यावापृथिवी' नाम दिया गया ।मित्र–वरूण , उषा –रात्रि को संयुक्त किया गया । ऋषियों को इतने से ही संतोष नहीं हुआ क्योंकि वे तो सर्वोच्च देवता की खोज करना चाहते थे। अपने चिन्तन के अंतिम चरण में उन्होंने यह महत्वपूर्ण तथ्य खोज निकाला कि परमतत्व (सत्) एक ही हैं जिसे ज्ञानी लोग अग्नि , यम , मातविश्वां आदि विभिन्न नामों से जानते हैं।

1 सर्वेश्वरवादः– इसका विवेचन ऋग्वेद के नासदीय सूक्त में मिलता हैं जिसमें कहा गया हैं। कि सृष्टि के आदि में एक ही परमतत्व थी। उसी से सृष्टि की उत्पति हुई । वही पूर्णरूपेण सृष्टि में व्याप्त हैं।

2 एकत्ववाद :– इसका विवेचन पुरूष सूक्त में हुआ जहां बताया कि सृष्टि का मूल तत्व विराट पुरूष हैं । वह विश्व व्याप्त होते हुये भी उससे कुछ अंशों से परे है। ऋग्वेद धर्म की उद्देश्य मुख्यतः लौकिक सुखों को प्राप्त करना था। देवताओं की उपासना युद्ध में विजय , अच्छी खेतों , सन्तान की प्राप्ति आदि के लिये जाती थी। यज्ञों द्वारा स्वर्ण की प्राप्ति में भी आर्यों का विश्वास था। उपनिषद् काल में यज्ञों का महत्व घट गया कर्मदण्ड के स्थान पर ज्ञान की प्रतिष्ठा की गयी । तप , त्याग , सन्यास आदि पर बल दिया जाने लगा । उपनिषदों की प्रमुख शिक्षा व्यक्ति के सारभूत तत्व आत्मा का जगत् के सारभूत तत्व ब्रह्म के साथ तादान्म्य स्थापित करना हैं।

वैदिक दर्शनः–दर्शन उस विघा को कहां जाता हैं जिसके द्वारा ..... का साक्षात्कार हो सके । तत्व दर्शन या दर्शन का अर्थ हैं तत्व का साक्षात्कार । यह मानव को मानव के दुखों से छुटकारा दिलाना कह सकते

हैं क्योंकि इसमें सत्य को मनुष्य के सामने रखा जाता हैं। हृदय की गाँठ तभी खुलती हैं जब सच को सामने रखा जाता हैं। जब उसका वास्तविक स्वरूप प्रगट होता हैं। उसे ही हम दर्शन कहते हैं। तथा उसके सामने वास्तविकता को रखता हैं।

भारतीय दर्शन और दार्शनिकों के बारे में टी.एस.एलियट. ने कहां थाः— ''भारतीय दार्शनिकों की सूक्ष्मताओं को देखते हुए यूरोप के अधिकांश महान दार्शनिक स्कूल के बच्चों जैसे लगते हैं।'' प्राचीन भारतीय इतिहास मुख्य छः दर्शन सम्प्रदाय विकसित हो चुके थे जो इस प्रकार हैं :—

1 सांख्य दर्शन :— इसके पर्वत कं कपिल मुनि इस दर्शन के अनुसार जगत की उत्पति प्रकृति से हुई हैं ईश्वर से नहीं । बाद में इसमें प्रकृति के साथ पुरूष भी जोड़ दिया गया और दोनों के सृष्टि का कारण माना गया।

2 योग दर्शनः—इसके पवर्तक पंतजलि को माना जाता हैं । योग दर्शन के अनुसार मोक्ष ध्यान और शारीरिक साधना से मिलता हैं । मोक्ष प्राप्ति के लिए कई तरह के दैहिक व्यायाम तथा प्राणायाम बनाये गये हैं।

3 न्याय दर्शनः—इसके प्रवर्तक अक्षपद गौतम हैं । इस दर्शन के अनुसार मोक्ष ज्ञान प्राप्ति से हो सकता हैं।

4 वैशेषिक दर्शनः—इसके प्रवर्तक ऋषि कणाद हैं। यह दर्शन न्याय दर्शन के बहुत नजदीक हैं किन्तु वास्तव में यह एक स्वतंत्र भौतिक विज्ञानवादी दर्शन हैं । वैशेषिक दर्शन ने परमाणुवाद की स्थापना की ।

5 पूर्व मीमांसा :—इसके प्रवर्तक जैमिनि मुनि को माना जाता हैं। मीमांसा का मूल अर्थ हैं तर्क करने और अर्थ लगाने की कला लेकिन इसमें तर्क का प्रयोग विविध वैदिक कर्मों के अनुष्ठानों का औचित्य सिद्ध करने के लिए किया गया ।

6 उतरमीमांसा :—इसके प्रवर्तक बादरायण को माना जाता हैं। इसे वेदांत दर्शन भी कहते हैं।

निष्कर्ष :—अन्त में हम कह सकते हैं कि वैदिक धर्म में जो धर्म हमें दिखाई देता हैं वो आरम्भ में भौतिक सुख — सुविधाओं की प्राप्ति का एक साधन प्रतीत होता हैं इसमें बहुदेवाद के साथ—2 एक परमशक्ति के प्रति लगाव भी दिखाई देता हैं । दर्शन की बात करे तो यह एक उच्च आदर्श प्रस्तुत करना दिखाई देता लेकिन धीरे—2 उसे भी यज्ञ कर्मकांडों से जबरदस्ती जुड़ा दिखाया जाने लगा।

सन्दर्भ सूचीः—

1 इंडियन फिलासफी , खण्ड 1 पृष्ठ 79—80
2 गीता
3 प्राचीन भारत का इतिहास तथा संस्कृति के0सी0 श्रीवास्तव पृष्ठ—798—99
4 नैषधचरित — श्री हर्ष 17—75
5 आउट लाइन्स ऑफ इन्डियन फिलासफी
एम0 हिरियन्गं पृष्ठ—54
6 प्रांरभिक भारत का परिचय — रामशरण शर्मा
पृष्ठ —280—281
7 प्राचीन भारत का इतिहास कृष्ण मोहन श्री माली
पृष्ठ—115—116